खिल्म- सन्त्यल्डा पेत च 9

31×11.5×0.16.m

आलेवपति मर्पा वावन्यने बराद्यन् नालावेभाते

प्रसारणंड म परलो स्त नपुर हो कहा तिवह-श्रीही। वारीस्तिषिप जादी

17

भविष्यतिमधीशवचनेवरिमत्। कालविभाराचालरीय वालक्ष्यरिमचिनाधाः विष्कृतिन्ति दिनाति वते। भूतवा वालप्र व्याः। गर्ता वाल्य नवरास्मत्। कालाव वालियः। विर्वे विद्रिता स्माव स्मान विवाद कि वे निपादि कि तास्व विवाद प्रमान विवाद कि विद्रात कि कि न्यिति वित्या मान्या ते हे भी वित्या न्यामानवति द्वाववागा विभावाचा तो प्रमावनवचनपादा एकुण्या विश्व व्याप्त विभाव व उवस्वारायार् कायानुमया सेत्रहे अस्यानुमया स्वारा कार्या साध्या साध्य साध्या साध्य साध्या साध्या साध्य था रुव्यविक्वेच प्राचित कुरुक कुले । द्रिया रेवी हरू कि विकास का विकास कि विकास कि कि विकास कि वि विकास कि वि विकास कि व चारम्त्रित्रम्पद्माद्द्वा स्वित्रमः यहात्रात्रसंवत्वाः प्रतिवधवाः प्राचात्वाः उद्देशामाद्राव्यतिमार् । वरावरवागेश मान्त्रीत्रम्पत्ताक्षत्राह्मान्त्रत्तात्राम् विवादानात्रात्रा विभावाग्रेष्ठपात्रविवादान्त्रात्रात्रात्रात्रात्र

ताताः विकारियाः वरः विविध्वमण्यु लिष्यान्य तरस्यात् विलेक्षियां वित्र लिष्ठ लेखाः स्वः। युक्त स्तिविष्या सम्लास्त त्राहेश्वरक्षात्राहः।कारक्षितः।हत्रविष्याद्वतिष्ठवात्रविष्ठवाः।विष्ठवात्रविष्ठवाः।विष्ठवात्रविष्ठतात्रविष्ठाः। व्याच्यमना सन्य मानवापम्य सित्वाः। विषाने व्यानिष्य ना सानि कि यहां से को विष्या वित्र ना स्थानित्र ना साल में ।तिर्य चापवर्ता त्वहे तस्य त्य मुद्याः। नाश क्ष्यत्य चे कि क्षिण तुवः। मन्य चा व क्षेत्रत्य मान्य स्थ ता न्य हार रम रममामस्ति हिंचे बें कु रेष रोपका प्रियमें प्रियम वसत्र निर्मित्रा राजा द्वा सप्ता ना मार्थ का मार्थ का मार्थ का मार्थ का मार्थ के निर्मेश के निर्मेश का मार्थ के निर्मेश का मार्थ के निर्मेश का मार्थ के निर्मेश के निर्मेश का मार्थ के निर्मेश का मार्थ के निर्मेश के निर्म इत्रश्चलः वरमवर शाम अवस्था नियादितः। द्रत्या तस्य स्थानिक मात्रात्रः। विश्वः साय देश मान्य वर्षे आयो नियादितः। द्रत्या तस्य स्थानिक स

दिवस्वातिरु शिस्तिविधारुक का जार्षकार्यके विधारिक विद्वातिर गितिविधारिक है स्पुत्र प्रचार ति के ती वा बका वा धारत व संवयं व समगिरिक्ष वेल्ला के दिसाम्यः मृष्ट्या द्वा जा निविक्ष मा ति हिन मा निहें मा मा हु मि मा महिन मा हा भ्राति से से मान्य के निया के वाणतिक्षताः। सर्वत्रमहिलिर्डितते ने स्थाने राज्यामा एउका चा व प्रसिष्या मार् माः। स्रविद्यमा एवि साचित्रक विरोधाः। तः। मनारावा।वर्णे र वरत्ने नायधाना नायधान्यं वर्षा मध्या र प्याचिकार प्रेय ने हता के वर्षे कु का मान्या ना नायधाना कि प्राचन के प्राचन क युव्यक्तित्व वहारियया वित्राहर निर्धा विद्या प्राचा का चित्र वीया वात्र अस्वाद ए विपदा द्वा स्वादा ने मानु ला 

पलनेएकाम्बर्धान्य इसमाउला म्या रातायामा रेश देवकच नारी ग्राय माया या वासी त्रिक्तिरमार्वनित्रमें त्रिक्ति हेर्ने विक्रिक्ति हेर्ने विक्रिक्ति हेर्ने विक्रिक्ति हेर्ने विक्रिक्ति हेर्ने न्यतराषाम्।सभक्तं ताषुव्यम्बादा। प्राष्ट्रीत्वत्तात्मात्रम् वृवत्वाहित्यश्चाहित्यवत्युत्तर्यदास्याहित्व के प्राचित्राम्य के का किया है त्या है म्यात्रः। प्रित्रात्र्वात्र्वर्वे व्युनवहनी भूष्ठे वत्ता ग्रायल श्री द्वाल वर्वत्रती वत्रा हुन्य त्र स्पान् । अवस्यात्र विद्वारि । विनः। इतिशादिनः। अभादिन्यत्रा विकरते द्वितिकात्ते स्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित्ति विन्द्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित्र विन्द्वित् विन्दित् विन्दित्व विन्दित् विन्दित्व विन्दित्व विन्दित् विन्दित्व विन्

यह स्तान हे व्यक्त वाक्ष वाक्ष वाक्ष वाक्ष वाक्ष वाक्ष वाक्ष विकास वाक्ष विकास विकास विकास विकास विकास विकास व काह्मः कित्रा में हित्य का मी की माचा में लाहा चः। उदी र का राजा का का का में में में में में में में में में मर्द्वास्त्र विश्व के स्वानित्र के स्वानित्र के स्वानित्र के स्वानित्र के से त्रानित्र के त्र के त्रानित्र के त वस्यवयायगरः। द्वाविक्तिः। विक्रिकारिक्वपतियात्रेज्ञा द्वी वा महिनुसान्याम्। वहान्य । रहे सामान्य क्रिका महिन्द्व । वहान्य मिन्द्र क्रिका महिन्द्व । वहान्य मिन्द्र क्रिका महिन्द्र विक्रिका महिन्द्र क्रिका मह वाद्यद्गां वाद्वत्ताद्यावाद्यक्ताहिलां देववे वाद्याद्रम् कामाया वर्ववचना त्राद्रमम त्रमा स्पित्रला चे किया विशेष्ट्र विशेष

त्र अवस्य मिण्या में के विष्ट्र क वस्तर साम्यामा मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या विकार मान्या मा विधान्न सामार्थित सामान्य विधान के माने नः। तर ध्वातारे रामत् नेपारिस जाता रुक्। क्रमारिसावुकाम वेक्ना स्वातिसाव स्वारिसाव स्वातिसाव स्व धारा १० वे वाह्मण विचाह विवाहण तर हिम न होति है के ते नावा ने विवाह ने स्थान होते हैं के ते नावा है ते नावा है ते नावा है ते नावा है ते नाव नावा है ते नावा है ते नावा है ते नावा है ते नाव नावा है ते नाव नावा है ते नाव नाव नावा । वाद्यार भवेत्रवा कुमर ने देव ते हे त्या द्वा ते द्वा ते देवा वाद्य ते वाद्य विश्व वाद्य वाद वाद्य वाद वाद्य वाद वाद्य वाद वाद्य वा ष्ट्राक्तारा द्वारा क्रामय विमाय समाय में रेज के के के किया माय माय के के रेज विमाय माय रमिलक् कात्रियाः व्यक्ति रस्ति रसरे व्यक्ति ग्राम्य विकास वि श्राता अस्या भरवर व तथा है के व चार त्या है कि विवह स्वता वा मान के के स्वता के स्वता के स्वता के स्वता के स्व

वस्त्रम्या हे जा का मुख्या है जा के विषय के स्वार के स्व क्षेत्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक्षात्राक् यत्रताहिष्यान्। नित्रश्चात्रायान्। की तवत्राव्यात्या छे छे दुन्। उमाहः वाकी। वर्षायन् जानाववत्रार्था कात्राव्या प्रावित्तिव कर अस्ति महात्सिन प्रापित व व व नर्षात्य ता क्रिया मिल क्रिया के क्रिया से स्वावित क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया वसमाहिष्याना विस्वित स्वा हुन्। मापुचान्छ वा हुन्यु स्व महाहिष्यः । महाहिष्यः । व भवाविवधावीवधावा अण्यतिकवाः क्षेत्रविद्यमाद्भाः। त्रीत्रत्य प्राप्त्राचिता का सक्षेत्रा संस्कृति । त्वाण सुद्रा उत्तरिया व्याप्त्रेने स्विति हो उत्तर स्ति प्रसावने तात्स्य प्रश्निय स्ति प्रस्ति प्रस्ति हो प्रस्ति हो । अपने प्रस्ति

केकर्कात्वकार् उन्हाति। यहरेडे वस्त्राचित्रकामान्ति। वरिवहां वतिष्ठति। प्राचेत्रवर्षार्थ अवर्षाता क्षणा उन्हाना य्वाना प्रति विवाद के ति विवाद के विवाद के प्रति के सर्वयुरात्राएक थुराकुक्तिचा प्रकार एएए हिल्सिरा हुन्। स्त्राणं त्रच्याः विक्रिय धुवा थुन गणं लेच्या छ नाए। मतः।वर्ष्मास्त्र द्वारा मूलप स्वाविहां से ता चार्य देवति मा से प्रकार में विवस् ल म् ल सी मारुला म्ब्रह्मार्थत्रस्य विश्वाचित्रम् स्वाचात्रम् स्वाचात्रम् त्राच्यात्रम् विश्वाचात्रम् त्राच्यात्रम् त्राच्यात्रम् विवः। बत्योते वर्षा प्रतन्त हलाता रणतत्व वर्षेषु। तत्र वाधुः। प्रतिन्न ति प्रति ने विवादि । वर्षा विवादि । वर्षा व प्यान्य ने ने विषय के तार के मग्रेश्रहेम्बर्भेड

लें का आर्थ्य छत्रे है। वाही वर माने सम्मा विभवे प्रति ने वह । उर्देश छत्रा व के त्या चाम्या दुन् । पृष्य प्रव ते व हमयलनगरमा महिंदान्य वहा में विदेश में विभाषी में ने विदेश हैं कि विस्ति हो रेडी में विभाषी स्वार्थ के विदेश में विस्ति हो रेडी हम्वल्यारमा महरेत्वरवहा ते विवेता ते विवेता ते विवेता ते विवेता ते विवेता विवेता के व एकाम्यान्यः मुद्रान्यः मुद् विष्वेचे वा राजाव के म्यान्य तर स्वायः विकास विकास स्वायः विद्या हो। विद्या के विचान के स्वायन स्वाय के स्वायन स्वाय के स्वायन स्वाय के स्वायन स्वयन स्वायन विश्वत्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र के वि त्यः। विन्धुतरिक्तिरिक्ताण्यात्रात्रित्ताकुरवर्षतीक्वचवार्ये कत्यः नार्कः। प्रक्रिः। प महायात्रहें ने विस्त्रे के विस्त्रा बुन् मिन्न विस्त्र के विस्त्र मां वह वचन तेन वा निति वचन ते ते विश्व व नाने वासिम्य या अत्र एत्रा क्र युवा क्रिक्ट प्राप्त के नियम क

जः वश्योजन्य स्थान्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य भाः प्रश्निमास्त्रम् स्वार्धित्र मापाम् कार्ये वास्त मुप्या नामन् इति विकास्य देशा । श्री मारिया विकास वित्र विकास तियाः मिया निर्देश प्रति । विकार मिन्दिया निर्देश सर्व देवता तिला शिव स्ताप्त्र माना वे वा प्रति व ने विकास मिन्दिया निर्देश सर्व देवता तिला शिव स्ताप्त्र में प्रति व ने विकास स्व के विक साल्ड मामान्बरकाम्यावमान्य देशका निवानित्र तिवानित्र विवानित्र का के के तिवानित्र युक्तिवहादीयते वृद्धिक्रियामा सन्ति विश्वाकित्र विश्वाकित्र वे क्षित्र विश्वाक क्ष्या क्ष्या

12

याः संता सर्-स्वाध्वयनेवा प्रतिविक्षतिवेक्षतिवा विक्षतिवा विष्यतिक्षतिवा विक्रमानिक विक्षतिक क्षित्वकारिक्ति। वित्तामा साम्य वित्ता हिन्ना हिन्न कितारणाध्यविषय हा का ता यते। प्रकृष्टिका यवाजना विष्या का रूपमम्मद् । यो । ग्रिश्व वाजनारि मिता राष्ट्रा छ्यु सिचा संस्था विकास के दिन विकास के त्रा के त्र के त अश्व मिता मिता के दिनि धार्ती के स्थान के त्र के त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मवीत्रापात्रपवद्यभन्तपतिनेपष्ठ। वरावरवरपत्रवीत्रमन्भवितात्रवारेपात्र मत्राद्याने मत्रामिन वितापति त्र श्वीनावष्टवरीत्रां ग्रांचीनात्र ग्वलगमी अध्वना प्रतिवी ग्रांभवात्र त्रांची गार्थित ग्रंची वित्र प्रतिविद्या का मार्थिक वात्र वित्र प्रतिविद्या का स्वाप्ति वात्र वित्र प्रतिविद्या का स्वाप्ति वात्र वित्र प्रतिविद्या का स्वाप्ति वात्र वित्र प्रतिविद्या का प्रतिविद्या का स्वाप्ति वात्र वात्र वित्र वित्र वात्र वित्र वित् तिति निवान ने विवान ने विवाद के कि स्वाद के कि स्व तिति निवान ने विवाद के कि स्वाद के कि

हिम्बा बुला ना बुक्त कर तथा जा वा विषय के ता धार्मित रापा तो में एवा प्रक्षित । उपराद्य में मिस्त विष्ठ ना संस्था के साम कि साम के साम तेन् दिन पाविता वास्त के ते पान । की तार्थका न्यांका ने विता वास्त मात्र विता वास्त ने विता वास्त ने विद्या विता वास्त के विता वास्त के विता वास्त विता वास्त के विता वास्त विता विता विता विता लप्रवात्रभाद्री मेगर हिम लाने प्राचे हे जा पात्रा पुरस्मा वा हमा हिन । हा विवादी। इकिएन इं १८ वृत्ति वित्र वश्चविद्वि ले वर्ष व स्थानिता त्रा ते व के का सामादे हैं दिस ता वा त्र में ति पा व्यव में ते विवाद के कि स्था दिया के कि स्था दिया के कि स्था दिया कि स्था च्याणः तयः हरू ह्या भ्याविति साञा त्या मिक्ता प्रार्थिता भ्या वा देशे वस की चार तर ते वे वे वे वित्र प्राप्त प सिराणमारिपासेंग्राति विश्वासिक्ष ति स्विति ति विश्वासिक्ष विष्य विश्वासिक्ष विष्य वि इलपाप्स्या वाकामितः। जाता कार्या वाका राजिले । स्वामित्रे प्रवेषा अधानारिको वा वे के पताप्त स्वाप्त दलवापुर्धा वाजागित्रात्रात्रात्रात्र वावपुर्णाप्याप्य प्रशास्त्र वाज्य वाज्य प्रशास्त्र वाज्य वाज्य प्रशास्त्र वाज्य वाज

चानित्य। ने में । वात्र त्या विनयिद्य हिंदी। वान्य व्या हता की या में । वात्र विकार वात्र वे वात्र वे वात्र वात्र वे वात्र वात्र वात्र वे वात्र वलाम् विष्याद्व वलाम् दुः विष्याद्व स्त्राम् वर्षे क्षित्व स्त्राम् वर्षे स्त्राम् वर्षे स्त्राम् वर्षे स्त्राम वर्षे स्त

दी चार्याचाचाचावादिविष्णमञ्जलेः।ग्राव्यमञ्जले स्वायक्रियो ब्राव्यमा त्रव्याचा म् बुम्भरूमा नत्य तरसा भ्राया बुखतानात्मकाराज्यव्यवीभवंत्रारत्यम्तिमात्र्यत्रात्रवंद्वत्यत्रात्रवात्रात्रत्यत्रात्रात्रत्यत्रात्रवात्रवात्रव वर्षा वर्षे वर्षा होता है से स्वार्ण के वर्षा स्वार्ण स्वार्य स्वार्ण स्वार्ण स्वार्ण स्वार्ण स्वार्ण स्वार्ण स्वार्ण स्वार्ण क्राज्या हु। इव देश हैं विक्र हैं वि

सिमाष्ट्रने वार्क्त के वार्त के वार्क्त के वार्त प्राचा हो ज्युचे ने विट के हो है वे वित है जे हो हो जा है। जे के ले के वित है वे वित है वे वित है वे वित है वे 

0位

अहेत्रुअमिवुस्। इतिवन्नुमा ध्यायसिद्तिया कारः। या न्यात्रा मे। अत्रेत्रियः। वित्रुत्तात्वा लव्योतना त्युता स्मायो वि शतिः। शिष्ट् के विभिन्नः। विसर्वना वर्षे भारतिहमः। दृश्यः। दृश्यः। दृश्यो दृत्रते त्राम् मुर्वसासी क्र तर्सादि। क्र मासिक्षित्रं ते क्षेत्राच प्रिमाना स्त्रिमासिलं प्रमितं विकात ता हुन कर हि। प्रत्रामावि र प्रवित्ता त्या स्विता ता विकात विकाल कर हि। प्रत्रामावि र प्रवित्ता त्या स्विता त्या स्विता ता कर कर हि। प्रत्रामावि र प्रवित्ता प्रकार स्वात कर स्वात स्वा ाया न्य तर ह्या मर्श्य अवसारा द तिलि दा ने ज्याहिन देशे देशे ही स्वाह से विस्ता साहा प्रश्व वस वा प्राण विभावा ने स्वाह से विश्व के स्वाह से विश्व के स्वाह से विश्व के स्वाह से विश्व के से से विश्व

यत्रीत्र विवस्त वाराभात्रकत्रायगह्यद्वित्रतित्वविद्याः प्रेशाः प्रत्यतित्वत्राह्यत्राध्यम् विद्याः विद त्रपट्यानाम्बर्धानामान्याः। त्राद्रीय्रश्चायाः अध्यायाः अध्यात्राच्याः विश्वत्राच्याः। त्राद्राच्याः। त्राद्राचः। त्राद्राच्याः। त्राद्राचः। त्राद्राच्याः। त्राद्राच्याः। त्राद्राचः। त्राद्राचः। त्राद्राचः। त्राद्राच अस्यलना ध्याप्ता त्या विक्रित न्यार्थियार्थिः। लहेल्यावार्यार्थित्र म्यार्थियार्थित्यात्र म्यार्थियार्थिताः व्याप्ति । लहेल्यात्र म्यार्थिताः म्यार्थिताः व्याप्ति स्वाप्ति । लहेल्यात्र म्यार्थिताः म्यार्थिताः व्याप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप मुत्रमान पारणानः। लहा । विद्याने विद्याने विद्याने के विद्याने विद निग्ध्यम् गृथ् मुक्तिमं ने पृति कुर्वा को त्याराष्ट्रिष्ट्र के ने ने त्या हात्य हिष्ट्र मिनी यात्राम्यस्तिविक्षित्रामितात्वः। हर्विष्टितिहार्यान्यविक्षित्वान्यविक्षित्रामित्रात्वे । राजाम्य सर्गायां के प्राप्त विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व के स्व के स्व

मुन्मिल्यम्बुश्रिय्वक्ते।सिम्पुनःसिम्पुनः।स्योवः।वर्षिण्यायाम्।वर्षिनिविद्रियः।र्ष्यद्वित्रायानिविद्वित्रः।स्य नासित्याव मार्गित्या विद्यान ज्ञा कि है नामा जाया सर्व वस्तुव । उपियान नाम्या वर्षा ने स्वा वर्षा ने स्वा वर्ष तितित्तर्थाः विकित्तः। विद्वान स्वा क्षेत्र वामाणामा व वस्त्रवः। उपियान ने स्वा तर्या व्य त्या विकित्त स्वा ने स्व स्व ने स्व न